श्रीविट्ठलनाथजी तथा सातोंलालजी

श्रीगणेशायनमः

श्रीगोपीजनवल्लभायनमः

व्रजयात्रा परिक्रमा व्रजचौरासीकोसकी प्रथम
श्री गुसांईजी ने करी सो श्रीगोकुलनाथजी अपने
सेवकन सों कहते हैं सो संवत १५०० भाद्रपदवदि

श्री आचार्यजी महाप्रभु और सेवक

१२ कों सेन आरती करिके पाछें श्रीगुसांईजी मथु-
रापधारे व्रजकीपरिक्रमाकरिवे कों सो तहां प्रथम
श्रीमथुराजी में श्री कृष्णजी को प्रागट्य भयो

है· तहां कारागृह की ठौर है· तहां श्री मथुराजी में
विश्रांतघाट है· तहां कंस कों मारिकें श्रीकृष्णने वि-
श्राम लियोहै· तहां श्री आचार्यजी महाप्रभुनकी
बैठक है· तहां ठाकुरजी ने स्नान करिके श्रम निवा-
रण कियो है· तहां सब व्रजभक्तन ने श्री ठाकुरजी
की विनती कीनी है· ताते विश्रांतघाट मुख्य है·
व्रजयात्रा को नियम यहीं से सब वैष्णव लेतहैं-

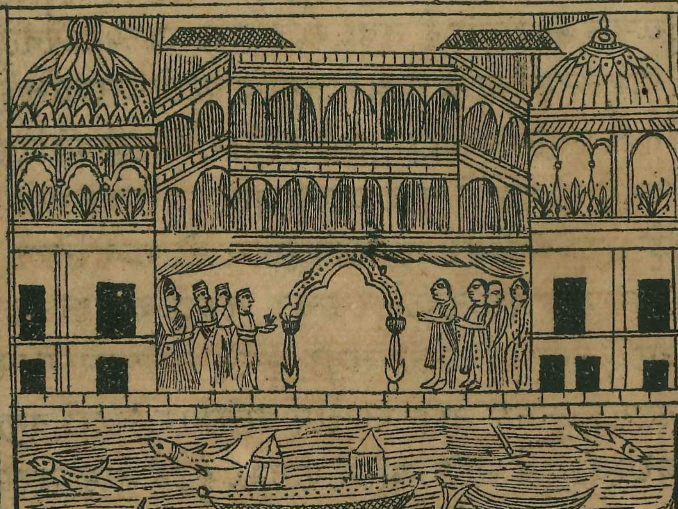

तहां अलमद्द घाट है ताके ऊपर सतघरा है तहां
श्रीगत्तश्रम की परिक्रमा है तहां ल्नेगघाट है तहां
प्रागघाट है तहां रामेश्वर महादेवजी को स्वरूप
है तहां स्यामघाट है तहां कनखेर क्षेत्र है तहां
तिंदुक नाम तीर्थ है तहां खंगाली घाट है तहां सूर्य
घाट है तहां ध्रुवक्षेत्र है तहां ध्रुवजी ने तपस्या की
नी है तहां सप्तऋषिन को टीलो है तहां सप्तऋ
षिन ने तपस्या कीनी है तहां कोटितीर्थ है तहांते
रामन को टीलो है तहां रावण ने तपस्या कीनी है
ताके आगें बुद्धि तीर्थ है तहांते आगे रंगभूमि है
तहां कुवलियापीड हाथी की ठौर है तहां गांडिव
धनुष तोस्यो है तहां चाणूर मुष्टिक मल्ल मारे
हैं तहां कंस कों मारि उग्रसेन को राज तिल-
क दियो है सो तहांते रंगेश्वर महादेवजी को स्व-
रूप है ताके पास सप्तसमुद्र कुप है ताके आगे अ-
लमद्द कुंड है ताके समीप भूतेश्वर महादेवजी
को स्वरूप है ताके आगे पोतरा कुंड है ताके पास
केशवरायजी को मंदिर है तहां कृष्ण कूप है ताके

आगे कुब्जक कूप है ताके आगे महाविद्या देवी
को स्वरूप है सो स्वरूप पांडवन को स्थापित करयो है
ताके आगे सरस्वती कुंड है तहांते आगे उत्तर
कोटितीर्थ है तहां गारगी सारगी तीर्थ है तहां
गणेश तीर्थ है ताके आगे गोकर्णेश्वर महादेव को
को स्वरूप है तहां गौतम ऋषि की समाधि है ताके आ
गे सरस्वती संगम है तहांते आगे दशाश्वमेध को घाट
है तहां अंबरीष को टीलो है तहां राजा अंबरीष ने
तपस्या करी है ताके आगे कृष्णगंगा को घाट है त-
हां कालिंजर महादेव को स्वरूप है तहां जो कोढी म
नुष्य मन शुद्धि करिकें स्नान करतो वाको कोढ निश्च-
य जाय सुंदर देही पावे· ताके पास सोमतीर्थ है
तहां घंटा भरन है· ताके आगे मुक्तितीर्थ है तहां
ते चक्रतीर्थ है तहांते वैकुंठ घाट है तहांते धारापत
न है ताके आगे गौघाट है ताके आगे वसुदेव घाट
है· ताके आगे वाराह क्षेत्र है ताके ऊपर वाराह को
को स्वरूप है तहां असकुंडा घाट है तहां शिवताल
कुंड है· यह श्री मथुरा जी की परिक्रमा मे धाम है·

श्रीमथुराजीकीपरिक्रमा

तापाछें मधुवनहै
तहां श्री ठाकुरजी ने गोचारन लीला करीहैताकें

पास मधुकुंड है, तहां कुंड है पश्चिम दिशा कदंब
के नीचे श्री आचार्यजी महाप्रभुनकी बैठक है तहां म-
धुदैत्य कों मार्यौ है तहां मधुदैत्य कुं मारिकें नारद कौ
संदेह टार्यो है. तहां चतुर्भुज रायजी को मंदिर है

ता पाछे तालबन है
तहां तालफल खवान सहित श्रीबलदेवजी ने

प्याये हैं· तहां धेनुअसुर दैत्य को मार्यो है· तापच

चें कमोदबन है· तहां नलशय्या विहार की ठौर है तहां नलक्रीडा कर के ब्रजभक्तन कों सुख दियो है तहां नाना प्रकार के शृंगार किये हैं· तहां श्याम तमाल के नीचे श्रीआचार्यजी महाप्रभुन की बैठक है तहां कपिलदेवजी श्रीठाकुरजी को मंदिर है तहां वेणुनाद की ठौर है तहां वेणुनाद करि के ब्रजभक्तन को बुलाये हैं तहां ब्रजभक्त छाक लेके आये हैं तहां नाना प्रकार की सामिग्री ब्रजभक्तन सहित आरोगी है

यह कुमोदबन की लीला है

ता पाछें सांतन कुंड है· तहां सांतन राजाको वरदा
नदियाहै तब श्री ठाकुर जू सात वर्ष के हते तहां सतु
वाकोभोगधर्यो है वानें आशिर्वाद दियो है जो

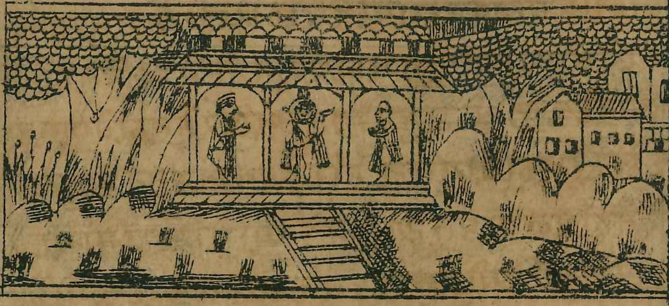

न्न तेरे पुत्र होयगो सो हरिभक्त होयगो· तहां श्री
फूल चांदी को दान करनो चाहिये· ताके आगे गऐस
रू गांव है तहां गंधर्व कुंड है

तापाछे बहुलावन है

तहां कृष्णकुंड धाम है तहां गायसिंह को मिलाप भ
यो है सो सिंह ने गौ को मारी नहीं· तहां बहुलागा
य को मंदिर है तहां श्रावण शुदि १२ द्वादशी को महात्म्य
है ता दिन न्ने स्नान करे और अेक गाय दे ता को ह-
न्न रू गाय दिये को पुण्य होय और मन शुद्धि रषि के
मांगे सो पावे· तहां कृष्णकुंड के पास उत्तर दिशा
बड के नीचे श्री आचार्यजी महाप्रभुन की बैठक है
यह बहुलावन की लीला है

यहां गोदान करनो चाहिये

तहां श्री बलदेवजु को मंदिर है तहां रेणुक कुंड है
तहां बलभद्र कुंड है तहांते स्वरूप प्रगटे हैं सो दोनों
श्याम स्वरूप हैं   बिखिनगाम

तहांते आगे तोषगाम है तहां श्री ठाकुरजु गायचरा-
यके आये हैं सो श्रम भयो है तहां तोष कुंड है तहां श्री
ठाकुरजु स्नान करि श्रम दूर किये हैं· तहां जलपा-
न किये हैं तापाछें मुखराई गाम है·

मुखराई·

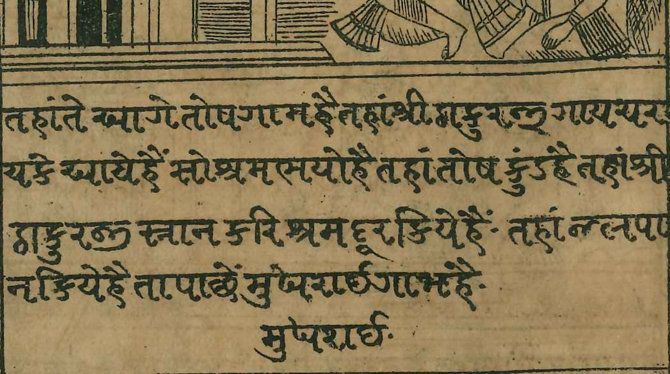

तहां २ कुंड है तहांते आगे कृष्णकुंड राधाकुंड धाम है त-
हां कार्तिक वदी अष्टमी को अर्धरात्रि के समय अेक सो
अेक तीर्थ तहां पधारत हैं तहां जे पुरुष तासमय स्नान करे
तिनकों सर्वतीर्थ के स्नान करिवे को फल होत है और म
नो कामना करके स्नान दान करे तिनके सर्व मनोर्थ सिद्ध

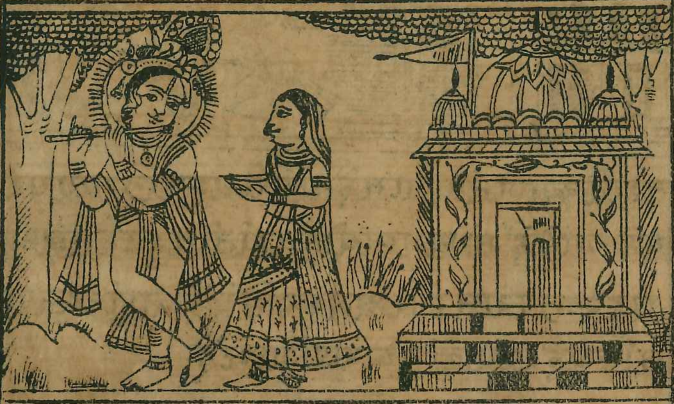

होय यहां राधिकाजी के वस्त्र और श्रीकृष्णजी के आभू
षण दान करने चाहियें· ताके पास ललिताकुंड है तहां
रासकदंब है· तहां वृक्षमें मुकुट को दर्शन है· तहां कूपा
वट है· तहां प्रथम हिंडोला झूले है तहां गिरिघाट है
तहांते आगे श्रीआचार्यजी महाप्रभुन की बैठक है

तहांश्रीगुसांईजीकीबैठकहैतहांश्रीगोकुलनाथ
जीकीबैठकहै· तहांपांचोपांडवनकेवृक्षहैतहांछ-
हुंनारायणकोंवृक्षहै· तहांवेणुनादकीठौरहैतहां
नारायणकुंडहैताकेआगेकुसुमोखरीहैताकोनाम
कुसुमखनहैतहांशृंगारकीठौरहैतहांसिंहासनहैतहां
उद्धवकुंडहैतहांउद्धवजीगुल्मलताहोयकेरहेहैतहांनार-
दकुंडहैताकेपासग्वालपोखराहैतहांश्रीगोवर्धन
नाथजीप्रगटेहैं· ताकेआगेमानसीगंगाहै

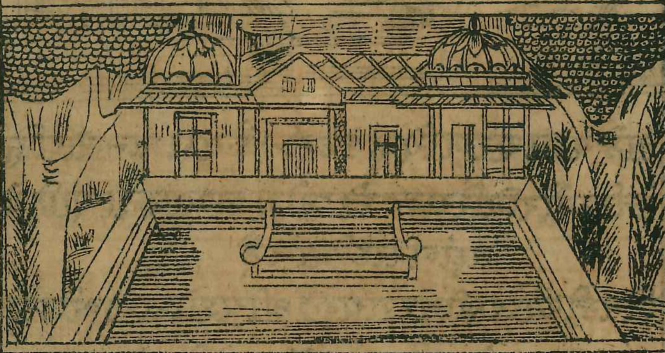

तहांचक्रतीर्थहैतहांचौंतराकेनीचेश्रीआचार्यजी
महाप्रभुनकीबैठकहैऔरएकबैठककुंडकेपास
हैतहांश्रीआचार्यजीमहाप्रभुजीसंध्यावंदनकरते

श्रीचक्रतीर्थ

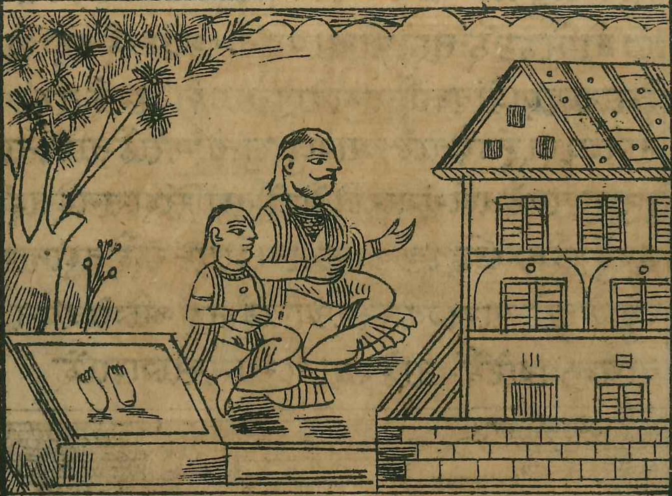

ताके पास चरण चिन्ह के दर्शन हैं· यहां मानसीदक्षिणा
देनी और गिरिराज को भोग लगावना चाहिये
तहां बसई गाम है
तिनकी ओर श्रीनंदरायजू श्रीयशोदाजू श्रीठाकु
रजू श्रीबलदेवजू आयकें बसे हैं ताके पास ब-
सई कुंड है· तहां ब्रह्मकुंड है· तहां श्रीगुसांईजू
नित्य न्हायवे को पधारते तहां ब्रह्माने आयकें

स्तुती करी है तहां फूलन की वर्षा करी है

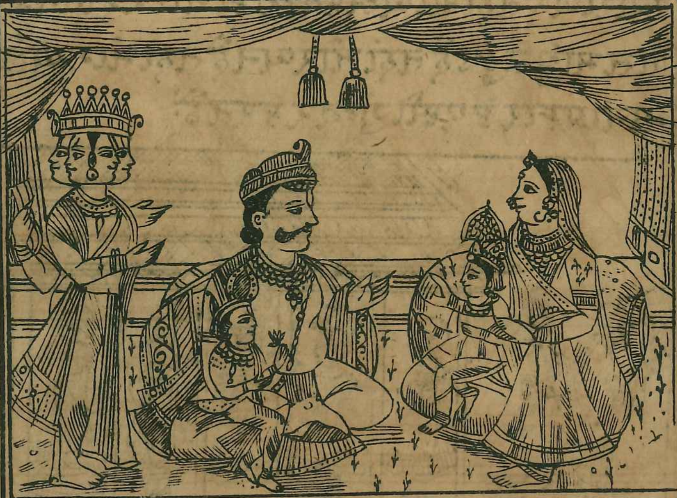

ताके उपर श्री हरदेवजी को मंदिर है तहां दानघाटी है तहां दानीरायजी को मंदिर है तहां श्री गोवर्धन गाम है तहां चारी कुंड है ऋणमोचन १ धर्मरोचन २ पापमोचन ३ गोरोचन ४ ये चारों धाम हैं ताके आगे जमुनावती गाम है तहां श्री यमुनाजी को घाट है तहां ते आगे खड़ींग गाम है तहां श्री ठाकुरजी ने खड़ी खड़ी के दान लिये हैं तहां किलोल कुंड है

हां जलपान बीड़ा सातों स्वरूपन सहित श्रीजी आरोगे हैं तहां श्री बलदेव जी को मंदिर है तिनके पास माधुरी कुंड है तहां मोरबन है तहां मोर आदि नाना प्रकार के पक्षी गुंजार करत हैं

ताके आगे परासोली गाम है

तहां परासोली वट है तहां चंद्रसरोवर हैं तहां ब्रह्म रत्नी करिके रास कीयो है तहां छः महीना की रात्री करी है तहां व्रजभक्तन कों परम सुख दीयो हैं तहां कुंजमें श्रीआचार्यजी महाप्रभुन की बैठक है तहां श्रीगुसांईजी की बैठक है तहां श्रीगोकुल नाथजी की बैठक है तहां श्रीगुसांईजी ने छः महीना रहिके विप्रयोग रस को अनुभव कियो है तहां कोठा है सो फूलघर है सो माला गूंथिके राम दास के हाथ पठावते विप्रयोग करिके आप विज्ञप्ति को श्लोक लीखी पठावते तहां रासमंडल को चौंतरा है तहां आगाडी शृंगार मंदिर है·

ताके पास पैंठो गाम है

तहां गोवर्धन धरिवे को अन्न सकूत आये है। और

तहां श्रीठाकुरजी श्रीबलदेवजी सहित आये हैं

तहां कनक शृंगार कीये हैं।

तहांते आगे आन्योर गाम है।

तहां सदू पांडे के घर में श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी बैठक है तहां संकर्षण श्रीबलदेवजी को तीर्थ है तहां जो कोई मन कर्म वचन सूं स्नान करे

तो वाको कोट जय सुंदर देही पावै तहां चरण
चिन्हके दर्शन हैं तहां गंधर्व कुंड है श्रीजीने तहां
गान कियो है ताके पास गोविंद कुंड है तहां जल
सीजन्याकी ठौर है तहां शुसजल ओप्यटे हैं तहां
कुंडके पश्चिम दिशा कदंप तरे श्रीआचार्यजी म-
हाप्रभुन की बैठक है तहां श्रीठाकुरजी के हस्ताक्षर
हैं तहां टोपी को दर्शन है तहां चतुरा नागरी के पा-
स श्रीजी पधारे है तहां चौंतरा है ताके आगे चल-
के अपसरा कुंड है तहां गोपी तलैया है तहां गोपा-
लसागर है ताके सनमुख श्रीठाकुरजी कौ जलघर
है तहां सातों स्वरूपन सहित श्रीजी जल आरोगे
हैं तहां स्यामढाक है तहां प्रथम हिंडोरा झूले हैं
तहां व्रज भक्तन सहित आपने गोचारन लीला
करी है तहां नित्य विहार की ठौर है ताके निकट
सुगंधी शिला है तहां गायन को खिरक है तहां श्री
ठाकुरजी की पादुका हैं तहां श्रीगोकुलनाथजी सं-
ध्यावंदन को नित्य पधारते तिनकी औरसिंहास-
न घटिया है तहां छैद आय सुरभी लैपायन करो

है तहां श्री ठाकुरजी ने वाकी पीठ ठोकी है और
कहे जो तेरो दान कोई नहीं लेगो तहां ईन्द्र को श्री
ठाकुरजी ने पीताम्बर उढायो है तहां श्री ठाकुरजी
ने पाग के पेच फेरी बांधी है तहां नव कांकरी ग्वालबाल
नके साथ खेले हैं तहां सुरभी गायन के खुर हैं तहां
ऐरावत हाथी के पांव हैं तहां श्री ठाकुरजी के चरन
चिन्ह के दर्शन हैं सो तहां सिंदुरी शिला है तहां स-
खीनने श्री स्वामिनीजी की मांगभरी है तहां बाज-
नी शिला है ताके नीचे सुरभी कुंड है

तहां पूंछरी गाम है

तहां रामदास की गुफा है· तहां पूंछरी को लौठा है
ताके आगे गोविंद स्वामी की कदंब खंडी है तहां गो
वर्धन की कंदरा है तहां नाना प्रकार की लीला करी
है तहां नाना प्रकार के सुष वन्नस कतन को दीखे है
ताके पास हरजी को पोखर है तहां हरजी कुंड है ताके आ
गें श्रीगुसांईजी की समाधी है तहां श्रीजी की आसा
गायन को षिरक है तिनके पास श्री गोवर्धन पूजन
की ठौर है तहां ते श्रीजी प्रगट होयके श्री आचार्य
जी महाप्रभुन के सनमुष पधारे है तहां छोकर के
नीचे श्री आचार्यजी महाप्रभून की बैठक है तहां
श्रीआचार्यजी महाप्रभू बिराजे हैं तहां श्रीनाः
थजी ने नूपुर की आज्ञा करी है तहां श्री आचार्य
जी महाप्रभून ने दूके नूपुर अपने हस्त को धुल
देके समराखे है तहां सुंदर शिला है तिनके उपर
श्री गोवर्धन नाथजी को मंदिर है तिनके सनमुष
बूढे बाबू को स्वरूप तिनके पास श्री ठाकुरजी
को चौंतरा है तहां श्रावण सुदी ३ श्री स्वामिनी

जी ने मानी है तहां सगरे व्रज भक्त शृंगार करि
के झूला झुलायबे को आये हैं तहां श्री ठाकुरजी
ने तीन को उत्सव मान्यो है तिनके आगे तुलसी क्या
रो है तहां दंडोती शिला है तहां श्रीजी की सींगपोरी है

ताके नीचे गोपालपुर ग्राम है.
तहां सातों स्वरूपन के सात मंदिर हैं सो अन्नकूट
में श्रीजी के संग अन्नकूट आरोगते तिनके पास
श्रीनाथजी की आसा भंडार की दौर है तहां श्री म-
थुरानाथजी को मंदिर है तहां एक सिंघासन के उ-
पर सातो स्वरूप बिराजते पाछें न्यारे न्यारे सात
मंदिर भये हैं तहां गुसांईजी की बैठक है तिन-
के पास श्री गोकुल चंद्रमाजी को मंदिर है ताके
पास श्री नवनीत प्रियाजी को मंदिर है ताके पास
श्री आचार्यजी महाप्रभुन को मंदिर है तहां श्री
द्वारकानाथजी को मंदिर है तहां श्री गोकुलनाथ
जी को मंदिर है तहां श्री विठ्ठलनाथजी को मंदिर
है तहां श्री मदनमोहन जी को मंदिर है ताके आगे
रुद्रकुंड है तहां श्री ठाकुरजी ने अंतरध्यान लीला
करी है तहां व्रजभक्तन ने रुदन कियो है, ताको
कुंड भयो है ताके पास सूकटा कुंड है तहां ते आ-
गे जल अन्न वृक्ष है सो तहां व्रज भक्तन
ने उनसों पूछ्यो है जो श्री ठाकुरजी को कहूं देखे

तब खेलने कों कही· खेलने नां कही· ताके आगें चौगान पैया की ठौर है तहां श्री ठाकुरजी चौगान खेले हैं· तहां नाना प्रकार के विलास किये हैं

तहां विलछू वन है

तहां श्याम तमाल के नीचे श्री ठाकुरजी· श्री ठकुरानीजी की बैठक है तहां आठ खोर ढाक है तहां व्रज भक्तन के संग नाना प्रकार की लीला करी है तहां

श्रीनाथजी को बागपछिउडो रह्यो है सो गोविंदस्वामी
लेआवे है सो ता दिनते शंखनाद की आज्ञा श्रीगु
साँईजी ने दई है ताके आगे गुलाल कुंड है तहां ब
संत के दीनन में गुलाल प्रगट होत है ताके पास गा
होली की कदंब पंडी है तहां ब्रजभक्तन ने श्रीठाकुर
जी श्रीठकुरानीजी की गांठी जोरी है विवाह कियो है

यह श्रीगोवर्धन की परिक्रमा में धाम है॰ ताके आगे डी
गनाम लठावन में सवन देषवे कूं यात्रा आये है तहां ना
नाप्रकारके दूवारा छूटे है॰ ताके पाछे परमहंस है तहां कृ
ष्णकुंड धाम है यही श्रीदामा श्रीकृष्णके सखा श्रीदामा
को गाम है तहां श्रीठाकुरजी की गाय इंद्रने चुराई है तहां
इंद्रकुंड है तहां इंद्रकूप है सो वहां गाय इंद्रलोक में छि
तनेन की मारिकें पाछें श्रीठाकुरजी के पास आई है॰
यह परमहंस की लीला है

ताके आगे आदिबद्री और अलख गंगा है

तहां ब्रजभक्त छांक लेकें आये है सो आरोगे है

ताके आगे कामवन है
तहां पंचतीर्थी है तहां धर्मकुंड है तहां यज्ञकुंड है
ताके उपर दशावतार के स्वरूप हैं तिनकी और
मन कामना तीर्थ है तहां जो मनो कामना करिके
मांगे शुद्ध भाव सो स्नान करे सो सब पूरण होय
और मन वांछित फल पावे ताके आगे विम-
लकुंड है तहां श्री ठाकुर जी विमल लगे हैं
तिनकी और यशोदा कुंड है तहां श्रीयशोदा जी

श्रीठाकुरजी के लिये छाक लैकें आवती सो
श्रीठाकुरजी आरोगते ताके पास लंका कुंड है
तहां श्रीठाकुरजी ने सेतु बांध्या है तहां रामा-
वतार की लीला सब प्रगट दिखाई है

तहां चक्रतीर्थ है तहां पद्मकुंड है तहां लुक लुक
कुंड है तहां लुक लुक कंदरा है तहां श्रीठाकुरजी

व्रजभक्तन सहित आंखि मिचौनी खेल खेले है तहां कंदरा में छिपिके पर्वत के उपर प्रगट भये हैं जहां वेणुनाद करे हैं सो सुनिके व्रजभक्त देखिके चकित होय रहे है

तहां चरन पहाडी है तहां श्रीठाकुरजी के चरन चिन्ह है तहां लकुटी को हौदा है तहां गाय बछरान को खिड़क है तहां मध्यान्ह को व्रजभक्त ख-

पने घरते छाक ले आवते सो तहां ग्वालमंड-
ली करिके आरोगते.

तहांते महोदधी तीर्थ है तहां श्री ठाकुरजी ने दधि
आरोगके मुख धोयो है ताते याको नाम महोद-
धि तीर्थ है ताके पास धर्मराय जी को मंदिर है त-
हां श्री ठाकुरजी ने वचन कह्यो जो मेरे भक्तन पर

औरवैष्णवन पर तेरो अमल नाहीं है तहां धर्मः
रायजु श्री ठाकुरजु को दंडवत करी. चरन स्पर्श
करि पाछें अपने लोक को गयो तहां नंदघट है तहां
नंदउपनंद सहित श्रीकृष्ण बलदेवजु सहित गो
द में लेकें बेठते ताके पास नंद कूप है ताके पास सु
रमी कुंड है तहां श्याम तमाल के नीचे श्रीआचा
र्यजु महाप्रभून की बैठक है तहां श्री गुसांईजु
की बैठक है तहां ग्वाल मंडली करिके छाक आरोग
ते तहां बिसलनी शिला है तहां श्रीठाकुरजु ने ना
नाप्रकार की लीला करी है ताके पास व्योमासुर की
गुफा है तहां सखान सहित भोजन करे हैं सो तहां
अेक सखाने आयकें कह्यो जो तुम्हारे गाय वछ
रान को अेक दैत्य हर लेगयो है तब श्री ठाकुर
जु ततकाल उठिकें व्योमासुर की गुफा में ते
ग्वाल वछरान को काढे और वाकों मार्यो सो
तहांते गोचारन लीला करत नंदगाम पधारे हैं
तहां भोजनथारी के आगे मानसीकुंड है तहां वाराह
कुंड है तहां कामेश्वर महादेवजु को मंदिर है

ताके आगें कनवारो गाम है

तहां कान्ह ग्वाल कों दर्शन दियो है तहां श्री बल-
देवजू श्रीठाकुरजू कुंडवारो आरोगे हैं तहां
हिंडोरा की ठौर है तहां कुंड के उपर श्याम तमाल
के नीचे आप धाक आरोगे हैं ताके पास सुनह-
रा की कदंब षंडी है तहां ब्रजभक्तन सहित ना-
नाप्रकार की लीला करी है तहांते आगे रासमंड-

ताके चौंतरा है तहां हिंडोरा की ठौर है तहां श्री आ
चार्यजी महाप्रभुन की बैठक है तहां ते कछु आगे
गे हैं तहां नित्य विहार की ठौर है ताके आगे चित्र
विचित्र शिला है तहां सखीजनने नाना प्रकार के फू
लन सों सेज सम्हारी है तहां श्री ठाकुरजी श्री स्वा
मिनीजी सहित विहार कीये हैं सो श्रम भयो है
सो जलक अंगराग को चिन्ह भयो है तहां सखी
जनने फूलन को बीजना करिके बीयार कर श्रम
दूर कीयो है ताके नीचे चौंतरा है सो तहां सखी जन
लीला को अवलोकन करत हैं

यह लीला अत्यंत गोप्य है

ताके आगे श्रीबलदेवजी कौ ऊंचो गाम है तहां
श्रीबलदेवजी सदां राज करत हैं तहां श्री ठाकुरजी
की सूक्ष्म सिन्या है तहां चौंतरा है तहां श्री बलदेव
जी अपने सखान सहित चौंतरा पर बैठे ते ताके
ऊपर छत्री है ऊपर कौं रास मंडल को चौंतरा
श्रीबलदेवजी को है तहां श्री बलदेवजी ने व्रज
सखन सहित रास कियो है तहां देहकुंड है तहां शु
क्लमावस सो स्नान दान करे तो सुंदर देही की सिद्धि होय
तहां ले वृक्ष हैं सो सखा श्री बलदेवजी के सखा हैं
तहां संन्मेगी तीर्थ है· यह ऊंचो गांव की लीला है·

ताके आगें बरसानो है

सो कीरतजू वृषभान को गाम है तहां मानोखर है
तामें कीरतीजू वृषभानजू स्नान करते ताके
पास यशोदाजू को कुंड है सो जब नंदरायजू य-
शोदाजू रोहिणीजू श्रीबलदेवजू श्रीठाकुरजू
श्रीवृषभानजू के यहां छपनभोग आरोगवेकों पधा-
रे हैं सो यशोदा कुंड के पास डेरा दिये हैं तहां चि-
कसोली गाम है सो तहां रहे हैं तहांते नेक दूर चौ-
वारी चौवारी सखीन को मंदिर है तहां रत्नकुंड है
तहां रत्न सिंघासन है तहां वृजभक्तन ने श्रीठा-
कुरजू को अनेक रत्नजडित के आभूषण समर्पे हैं
और नाना प्रकार की सामिग्री आरोगाई है तहां
कुंड में जल पान कियो है तहांते आयके दोहनीकुंड है
तहां श्रीयशोदाजू एक समय दोहनी धोयवेकों
पधारी हैं तहां श्रीस्वामिनीजू मिली हैं तहां श्री
यशोदाजू ने श्रीस्वामिनीजू को शृंगार कियो है
ता समय श्री ठाकुरजू पधारे हैं तब श्री यशोदा
जू दोउन की शोभा देखीकें विथसो आयगा पसा

रिकें यह वरदान मांग्यो जो मेरे कन्हुवा को ब्याह
ईनहि सों होय ताके पास मोहनीकुंड है तहां विला
सगद है तहां विलास मंदिर है तहां रास विलास
किये हैं तहां हिंडोरा झूले हैं तहां दान मंदिर है तहां
श्रीठाकुरजी ने दधि के लिये नृत्य किये हैं तहां रास
को चौंतरा है तहां हिंडोराकी ठौर है तहां गहवर वन
है तहां दान के मिस करके सांकरी खोर हे. श्रीस्वा
मिनीजी को लेकें वन में पधारे हैं तहां श्रीआचार्य
जी महाप्रभुन की बैठक है तहां मान मंदिर है तहां श्री
स्वामिनीजी ने मान कियो है तब श्रीठाकुरजी ने च-
रन स्पर्श करिकें सौं खाई है मान मनायो है तहां
रास विलास किये हैं तहां हिंडोरा झूले हैं तहां मो-
रकुटी है तहां श्रीठाकुरजी मोर को स्वरूप धरिके नृत्य
करत हैं सो मोर साक्षी रूप है अपनी वानी बो-
लिके श्री स्वामिनीजी कों संकेत की समस्या करत हैं
सो ताते श्रीठाकुरजी को परम प्रिय है ताके आगे श्री
स्वामिनीजी को मंदिर है नीचे कीरतीजी व्रषभान
जी श्रीदामा सखा को स्वरूप है तिनके पास अष्ट

सखीन को मंदिर है॰ यह बरसाने की लीला है

बरसानो

तिनके आगे पीरी पोखर है

सो तहां श्री स्वामिनीजू उबटना लगाय सखीन
सहित्त स्नान करती तहांते श्रीठाकुरजू लीला करत
संकेत्त पधारे हैं ताके आगे प्रेम सरोवर है॰ तहां श्री
ठाकुरजू श्री ब्रजभक्तन से प्रथम प्रीति भई है
तब ब्रजभक्तन ने श्रीठाकुरजू को पीत्तांबर उ-

दायो है तहां सखूने को दिन मान्यो है तहां कदंब के
नीचे चौंतरा ऊपर श्रीठाकुरजी विराजे है तहां स-
खव्रजभक्तनने श्रीठाकुरजी ने हस्तकमल में
राखीबांधीहै तहां रास कीयोहै ताके आगे विम-
लादेवी है तहां विमलकुंड है तहां व्रजभक्तनने शृं-
गार कीयोहै तहांते संकेत वट पधारे है तहां वट के
नीचे श्रीआचार्यजी महाप्रभुन की बैठक है ताके
सनमुख जाली में श्रीगुसांईजी की बैठक है तहां
रास को चौंतरा है तहां रास कीयो है तहां रास मंड-
ल को चौंतरा है तहां शृंगार कीयो है तहां कुंड के ऊप-
र छोंकर पीपर नीचे श्रीआचार्यजी महाप्र-
भुन की बैठक है तहां संध्यावंदन करते तहां कदंब-
खंडी को वन है तहां कृष्णकुंड है तहां श्रावणसुदी
१५ पून्यो को रास भयो है।

ताके आगें श्री चंद्रावली जू को गाम रीठोरा है त-
हां चंद्रावली कुंड है तहां चंद्रावली जू की बैठक है
तहां चंद्रावली जू को कुंज भवन है तहां पीपल के
नीचे श्री आचार्य जू महाप्रभून के पुत्र श्रीगुसांई
जू की बैठक है जहां नाना प्रकार की कुंज द्रुम वेली है

तहां नाना प्रकार की बिहारलीला करी है ताके पास श्रीयशोदाजी को मंदिर है तहां कृष्णकुंड है तहां प्रातःकाल बछरान कों जलपान करावते ताके पास श्रीललिताजी को मंदिर है तहां ललिता कुंड है तहां रास मंडल को चौंतरा है तहां हिंडोरा की ठौर है तहां श्रीललिताजी की न्यारी न्यारी कुंज है ताके पास श्रीविशाखाजी को कुंजभवन है तहां विशाखा कुंड है तहां श्रीठाकुरजी नित्य पधारते तहां विलास कुंड है सो तहां कहूं घन की न्यारी न्यारी कुंज है तहां पूर्णमासी जी को मंदिर है तहां पूर्णमासी कुंड है तहां कुंज में नाना प्रकार की लीला ब्रजभक्तन सहित करी है ताके आगे मोहन कुंड है तहां श्रीठाकुरजी की छवि देखिके ब्रजभक्त मोहित भये हैं देह दशा रही नहीं व्याकुल भये पाछें श्रीठाकुरजी ने वेणुनाद कियो है तब सबन को सुधि भई है तादिन ते ब्रजभक्तन ने श्रीठाकुरजी को मोहन नाम धर्यो है तहां रास कियो है तहां रास घास की धान की क्यारी है तहां फिर बाको लोग रास रोगे हैं तहां श्रृंगार किये है तहां वेणुनाद करिके स·

बगाय चुलाई हैं तहां गधैला घास है तहां गाय चराई हैं तहां यशोदाकुंड है तहां श्रीठाकुरजी प्रेम सोगाय चरावन को पधारे हैं तहां गोपाष्टमी को उत्सव मान्यो है तहां कृष्ण बलदेव जी को रास मंडल को चौंतरा है तहां श्रीयशोदा जी को मंदिर है तहां हाऊ को स्वरूप है तब श्री ठाकुर जी को श्रीयशोदा जी डरपावती या भांती जो दूर खेलन जिन जाउ लाल मेरे हाऊ आये हैं तब श्री ठाकुर जी ने कही मैया वाको देखें नाहीं हाऊ कैसे होत हैं सो मो को दिखाय ये कह के गाय बछरा लैके वन में पधारे ताके पास मधुसूदन कुंड है तहां दधि बिलोयबे के माट हैं ताके पास पद्मतीर्थ है ताके पास चरन पहाड़ी है तहां श्री ठाकुर जी के चरन चिन्ह हैं ताके आगे पनिहारी गाम है तहां पनिहारी कुंड है ताको जल श्रीयशोदा जी के घर आवतो सो जल श्रीठाकुर जी पान करते ताके पास बड़े २ कदंब और द्रुमलता हैं तहां श्रीकृष्ण बलदेव जी गोपन सहित मिलिकें बैठते गायन को

हेरते ताके पास पानसरोवर है तहां सब गायन जल
लपान करते तहां कुंड के पश्चिम दिशा श्रीआचार्य
जू महाप्रभुन की बैठक है सो तहां छोंकरा और
कदंब के वृक्ष हैं यह महा अलौकिक स्थल है सोत
हांजल है सो तीन प्रकार के तापको दूर करत है ताके
पास गाय वछरान के बांधवे को खूंटा है तहां गाय
बछरा बांधते तहां श्रीठाकुरजी श्रीबलदेवजी
गोदोहन करते तहां श्रीनंदरायजी की गायन को खिरक
है ताके पास मोतीकुंड है तहां मोतीन की माला करिकें
गायन को पहिराई हैं तहां छछिहारी कुंड है ताके
पास जल बिहार की ठौर है जहां रास मंडल को चौं
तरा है तहां रास कीये हैं ताके पास बिहार कीये हैं ताके
पास टेरकदंब है तहां सात वृक्ष एक ठौर हैं ताके नी-
चे रास मंडल को चौंतरा है तहां बैठक है ताके पास
नंदगाम की कदंबखंडी है सो हुवां मध्यान के सम-
य गायन कों बुलावते तहां श्रीठाकुरजी की बैठक
है तहां गलीकुंड है तहां गायन कों जल पान कराव-
ते तहां शृंगार करिकें रासादिक लीला करी हैं

तहां व्रजभक्तन कों परम सुख दिये हैं तहां नानाप्र-
कारके पक्षी गुंजार करत हैं तहां ते विलासवट है त-
हां रासलीला करी है सो श्रम भाग्यो है तहां हंस स-
रोवर में जलविहार किये हैं फिर शृंगार किये हैं
ताके पास सारसवन है तहां फूल बीने तहां श्रीठा-
कुरजी ने श्रीस्वामिनीजी की बेनी गूंथी है ताके पास
रासमंडल को चौंतरा है तहां नानाप्रकार के द्रुम
और कदंब हैं तहां ते पूर्व दिशा में कुंडलवन है तहां
श्रीठाकुरजी के कुंडल खोय गये हैं सो व्रजभक्तन
ने ढूंढ़िकें काढे हैं पाछें श्रीठाकुरजी कों पहिराये हैं
ताके पास वख्तरवन है तहां श्रीबलदेवजी, श्री
ठाकुरजी सखान सहित वस्त्र पहिरे हैं

यह नंदगाम की लीला है

ताके आगे करहलाउपवन है

तहांकृष्णकुंड धाम है तहां वृषभानजी कोउपवन है श्रीठाकुरजी ने व्रजभक्तन को कंकण पहिराये हैं तहां व्रजभक्तन के संग रासादिक लीला करी है तहां रासको चोंतरा है तहां हिंडोरा की ठोर है तहां दधिलीला करीहै तहां करहलाकी कदमखंडी है तहां नित्यविहार करते· तहां कदमके नीचे न्यारेन्यारे चोक हैं सो अपने अपने जूथपति व्रजभक्तन के मंडल हैं तहां कुंजनमें न्यारे न्यारे रमण कियेहैं तहां छोंकरके नीचे श्रीआचार्यजी महाप्रभुन की बैठक है ताके आगे कमई सखी को गाम है तहां श्रीठाकुरजी श्रीस्वामिनीजी के संग सखीके घर पधारे हैं· तब वासखीने बहुत सनमान करिकें उनकी पूजा करी है ताके परली ओर आंजनोखरे है तहां आंजनकुंड है तहां कदंबके नीचे श्रीठाकुरजी श्रीठकुरानीजी की बैठक है तहां ठाकुरजीने श्रीस्वामिनीजी के नेत्रन में आंजन आंज्यो है तहां रासरमणकिये हैं तहां एक समय श्रीठाकुरजीने ग्वालमंडली

इनिके छाक आरोगे हैं

ताके पास पिसायो गाम है
तहां श्रीठाकुरजी कों प्यास लगी है तहां श्रीस्वामि-
नीजी सखिन सहित जल लेके पधारी हैं सो जल
श्रीठाकुरजी आरोगे हैं तहां श्री कृष्णजी ने वेणु
नाद करिकें अनेक प्रकार के जल प्रगट करे तहां श्री
स्वामिनीजी ने गोपीजनन को संदेह मिटायो है ने

ये सब सामर्थ्य है· तहां अनेक कुंज कुटी हैं तहां स-
ईके वृक्ष हैं तहां कदंब के वृक्ष हैं तहां श्रीस्वामिनी
जी की बैठक है तहां कुमबेली ऊपर छाय रहीं है·
तहां ललिताकुंड है तहां ललिता जी को गाम है
तहां हिंडोरा की ठौर है·

पिसायो गाम

ताके आगे बिद्रबन है

तहां गायन कों खेदी है ताके पास पकासुर की ठौर

है तहां श्रीठाकुरजी ने बकासुर कों मार्यो है सो
श्रम बहुत भयो है तहां सखीनने श्रीठाकुरजी के
चरणारविंद चांपे है तहां पंखा किये हैं तहां रास
मंडल को चोंतरा है तहां नानाप्रकार की सामिग्री
आरोगी है तहां सूर्यकुंड है तहां श्रीस्वामिनीजी
साजीके लिये फूल बीनबे कों पधारी हैं तहां श्री
ठाकुरजी मोरको स्वरूप धरिकें निर्त करत हैं तब
ललिताजी की दृष्टी परी है तब मनमें कहीजे ये
कोई अवतारी पुरुष हैं सो इनकी फूलवारी तोरी
है सो जान नहीं देइंगे तब श्रीस्वामिनीजी को
हार लतासों उरझिकें टूट पर्यो है सो मोती-
चुनन लागी हैं सो इतनेही में श्रीठाकुरजी पीछे
ते आयकें पुष्प की गेंद पीठ में मारी तब श्रीस्वा-
मिनीजी कों दर्शन भयो है सो देह दशा रही नहीं
बहोत व्याकुल भई तब ललिता बरसाने में
ले आयकें कीरतीजी सो कहीजे तुम्हारी बेटीका
रेने खाई है तब श्रीठाकुरजी गारूडू को स्वरूप
धरिकें तहां पधारे हैं पाछें आछी करिकें आये हैं

ताके पास कुमर धन है· तहां ब्रजललनाने श्री
ठाकुरजी को नाम कुमर धरयो है· तहां चामुंड है
तहां रास बिलास कियें हैं तहां जल बिहार कियें

हैं तहां गहवर वन है॰ तहां नाना प्रकार की द्रुमवेली
है ताके आगे अलक उपवन है तहां श्रीठाकुरजी
ने श्रीस्वामिनीजी के चरणारविंद में अलक दिये
हैं तहां नाना प्रकार के श्रृंगार अपने हस्तकम-
लन सों किये हैं॰ तहां वेनी गूथी है तहां नाना प्रकार
की रासादिक लीला करी है तहां स्नान कियो है
तब श्रीठाकुरजी ने मान मनायो है तहां अलक
वट है तहां रासमंडल को चौंतरा है तहां हिंडोरा
झूले हैं तहां कुंड है तहां जलसिज्या विहार है
ताके आगे रासलीला कुंज है तहां रासविहार
की ठौर है ताको नाम कोकलावन है तहां कृष्णकुंड
है ताको जल सर्व काल में सीतल रहत है॰ तहां
कुंड के पूर्वदिशा में श्याम तमाल के नीचे श्रीआचा-
र्यजी महाप्रभुन की बैठक है तहां नित्यविहार
करत हैं ताके पास ललिता कूप है तामें ते जल
लेके श्रीललिताजी ने श्रीठाकुरजी को स्नान करा
ये हैं पाछे जुगलरूप श्रृंगार किये हैं तहां नाना
प्रकार के कोकिलादिक पक्षी मधुर शब्द करत हैं

तहां नाना प्रकार की द्रुमलता है सो तहां बड़े सघन
कदंब हैं तहां कोकिला कुंड है तहां कमल कमोदनी
के फूल फूलि रहे हैं तहां अनेक भँवर गुंजार कर
त हैं तहां स्वामिनीजू की निकुंज है तहां होली खे-
लि के निर्त विहार कीये हैं ता पाछे छोटी बड़ी बै
न है सो तहां जौवन की बिठक है तहां गौ बैठती
तहां कृष्णकुंड है तहां बलभद्र कुंड है तहां श्री ब-
लदेवजू को मंदिर है तहां ते गोदोहन करि के
संध्या सकारे दूध की कावर भरि के नंदगाम पठाव
ते तहां गौ बहुत सुख पावती यह बैठन की लीला
है ताके पास चरण पहाड़ी है सो तहां एक स-
मय गोपभेष धारण कियो है जैसे गोवर्धन
धारण कियो है तैसे ही इनहू को धार्यो है तहां
चरण चिन्ह के दर्शन है ताके पास सुरभी गौ के
खुर हैं तहां तुरंग घोड़ा के खुर हैं ताके पास ऐ
रावत हाथी के पांव हैं तहां इंद्र ने स्तुति करी
है तहां सखानने श्री ठाकुरजू के चरण धोये
हैं ताको चरण कुंड भयो है ताको नाम चरण

ंगा है तहां एक समय श्री ठाकुरजी ने दधिवि
लोयो है सो माखन श्रीकृष्ण बलदेवजी ने सखा
न समेत शिलाऊपर आरोग्या है सो ता समय

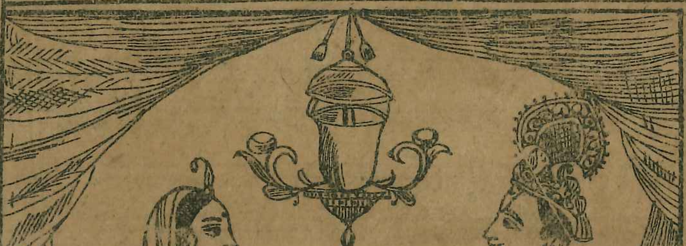

श्रीस्वामिनीजी और श्रीललिताजी मिश्री ले
के पधारी हैं सो नवनीत मिश्री आरोगे हैं सो मिश्री
प्रसादी सखान कों बांटि दियो है तहां नाना प्रकार की

लीलाकरीहै॰

तहांते आगे रासोलीगामहै

तहां श्रीठाकुरजी नेअनेकभक्तन सहित रासरंग-
नलीलाकीनीहै तहां अनेक प्रकारके सुखभक्तन
कोंदियेहैं तहां रासमंडलको चौंतराहैतहां रासो-
लीकुंडहै ताके पास दधिगामहै तहां श्रीठाकुरजी
नेदधिलीलाकरीहै तहां दधिकुंड हैतहां मधुसूदन

कुंड है तहां सातों सखीन के सात रमण के मंडल हैं तहां शृंगार मंदिर है तहां शृंगार करिके रमण किये हैं तहां एक सखा आय श्री ठाकुरजी सों कह्यो जो गाय दूरि निकसी गई है तब लीला सुख देखि वे कों तहां ते उपवन में पधारे हैं तहां वेणुनाद करिकें सब गायन कों बुलाई हैं तहां श्रीयशोदाजी पधारी है सो श्रम भयो है पसीना अंग में आयो है तब श्री ठाकुरजी ने श्रीयशोदाजी को कही जो तुम शीतलकुंड में स्नान करो तब श्री यशोदाजी ने शीतलकुंड में स्नान करो तब शीतल भई श्रम सब दूरि भयो ताते कुंड को नाम शीतलकुंड है तहां श्री आचार्यजी महाप्रभुन की बैठक है तहां छोंकर कदंब श्याम तमाल के वृक्ष हैं तहां कदंब के नीचे श्री ठाकुरजी की बैठक है तहां श्री यशोदाजी पधारी है हैं सो श्री ठाकुरजी सो कह्यो जो लाला मैंने रास देख्यो नाहीं सो मोकों दिखाओ तब श्री ठाकुरजी ने मन में विचा- री जो श्री यशोदाजी के आगे गोपीजन रा-

स कैसे खेलेंगी तब श्री ठाकुरजी ने सगरे कदंब गोल करके न्यारे न्यारे चौक दिखाये हैं सो तहां काउ चौक में सखा ठाड़े नृत्य करत हैं काउ चौक में गाय ठाड़ी चकृतभई हैं चोक चौक में श्री ठाकुरजी सखान सहित ठाड़े हैं पास श्री यमुना जी ठाड़ी हैं या प्रकार न्यारे न्यारे चौक श्री यशोदाजी कों दिखाये हैं तब श्री यशोदाजी ने श्रीठाकुरजी के चरण परस करिकें उठी तब श्रीठाकुरजी ने श्रीयशोदाजी सों पूछ्यो जो तुमने कहा देख्यो तब श्री यशोदाजी ने कह्यो जो मोकों ब्रज के लोग कहत हते जो तुमारो लरिका श्री कृष्ण गोपीन के संग रास खेले है सो येतो सब न्यारे न्यारे चौक खेले हैं सो तोकों सब ब्रजवासी झूंठोही दोष लगावत हैं तब श्री ठाकुरजीने कह्यो मैया में दाउ और सखन के संग या प्रकार खेलत हों तू छाक पठावत है सो में आरोगत हों तब श्रीयशोदाजी तो नंदगाम पधारी हैं तब

श्रीठाकुरजी ने ऊंचे टेंब पर चढ़िके दूर लों देख्यो
तबश्रीयशोदाजी सिंहपौर लों पधारी तब श्री
ठाकुरजी टेंब के नीचे उतरे पाछे श्रीबलदेवजी
को और सखान को गाय लेके पठैन पठाये और
आपवहींरहे जहां रास को चौंतरा है तहां व्रज
भक्तन के संग रासादिक लीला करी है तहां
सूर्यकुंड है ताको जल अत्यन्त निर्मल है सो ताको
जल सब सखा पछरा पीवते यह कोटवन की लीला है·

ताके आगे क्षीरसागर शेषशायी है तहां सन-
कनने श्रीठाकुरकू सों कह्योंन्ने क्षीरसागर
में श्री लक्ष्मीनारायण कौन प्रकार बिलास करत
हैं सो हमकौं दिखावो तब श्री बलदेवजी तो
शेषरूप भये तिनकी सिज्यापर आपचतुर्भुज
स्वरूप धरिकैं शंख चक्र गदा पद्म लेके पौढे नाभी
कमल में ते ब्रह्मा सहित दिखाये· तब देवता

सब आनंद सहित स्तुति करन लगे फूलन की
वर्षा करी है कह्यो महाराज जो लीला करत है ते
सोई करो अबही लीला देखें तब श्री ठाकुरजी ने
कही अबही यालीला को समय नहीं है अबही
दुष्ट कंस को नहीं मारनो है पाछे सबन ने बिनती
कीनी जो महाराज हमें ये लीला मत छिपावो तहां
खिर्नी आमरे के वृक्ष हैं तहां पर श्री लक्ष्मी रूपने
मुख्य श्री स्वामिनीजी चरणारबिंद दाबत है तहां
संग में चंदन ब्रजभक्तन ने समर्प्यो है तहां
धोती वस्त्र पहिरे हैं तहां मेवा को भोग समर्प्यो है
तहां खीर की सामिग्री आरोगे हैं पाछे ब्रज
भक्तन ने कह्यो जो महाराज हमको यह लीला
मति छिपाओ जैसे आगे ब्रज संबंधी लीला
करत हते सोई करो तब श्री ठाकुरजी ने और के
ब्रजभक्तन के संग रासादिक लीला कीनी है
सो श्री बलदेवजी तो गाय चरायवे कों दूर जाते
तहां अनेक प्रकार की कुमवेली छाय रही है यह बड़ी
शोभदाई की लीला है तहां ते श्री यमुनाजी की पु-

लीन है तहां श्रीठाकुरजी पधारे हैं तहां श्रीठाकुर
जी श्रीबलदेवजी सहित बतीसबेर श्रीयमुना
जी में तैरके उनको दोष दूरि कियो है तहांते लाल
बाग में पधारे हैं सो तहां कदंब तथा बड़के वृक्ष
हैं ताके नीचे आयके बिराजे हैं तहां व्रजभक्तन
ने लाल बागे को शृंगार कियो है आभूषण सब
फूलन के समर्पे हैं तहां श्री यमुनाजी के टीले पे चढ़ी
के वेणुनाद किये हैं तहां सब मोर आदि पक्षी स
ब चकित भये हैं तहां रासादिक लीला करी है ताके
पास शेरगढ़ बड़े गोप को गाम है तहां व्रजभक्
तन के संग सेहरा खेले हैं तहां ठाकुरजी हारे हैं
नानाप्रकार की सामिग्री व्रजभक्तन ने आरोग
ई है तहां आरती कीनी है ताके आगे रामघाट है ता
को नाम बिलासवन है तहां एक समय श्रीबलदे
वजी ने अपने व्रजभक्तन के संग रासादिक लील
कीनी है तहां श्री यमुनाजी ने श्रीबलदेवजी सों
कह्यो जो तुम रास के पति नहिं हो श्रीठाकुरजी रास
के पति हैं सो उनही कों यह लीला सोहत है तुमको

रास सोहत नहीं यह सुनके बलदेवजू को बहुत
क्रोध भयो तब श्री बलदेवजू कों बहुत बुरी लगी
है रास छोड़के हल लेके दोड़े और आकर्षण कियो है
तब उहांते उलटी दक्षिण बाहिनी बैंथी है यह बि-
लासबन की श्री बलदेवजू की रासादिक सोभा है
ताठौर श्री बलदेवजू को मंदिर है तहां पीपर को वृक्ष है
सो सब श्री बलदेवजू के सखा हैं तहां श्री बलदेवजू
बिराजत हैं ताके पास चार सखान के गाम हैं तहां
ब्रह्मघाट है तहां श्री ब्रह्माजू ने तपस्या बहुत करके
क्रोध क्षमा करायो है॰

ताके आगे आभूषणवन है-

तहां फूलनके आभूषण व्रजभक्तन ने श्रीठाकुर जी कों पहिरायेहैं ताके आगेनिवारवनहै तहां निवा-रेके फूल प्रफुल्त होत हैं तहां गुंजवन है तहां गुंज-नकी माला करिके व्रजभक्तन ने श्रीठाकुर जी कों पहिराई है और तहां नाना प्रकार के फूलनके बगी-चा अलग अलग व्रजभक्तन के श्रीयमुनाजी के तीरपर हैं तहां मध्यान्हके समय नित्य व्रजभक्तन सहित कुंज मंदिर में विहार करत हैं ताके आगे अ-क्षयवट है तहां सब गोपी मिलिकें शृंगार कियेहैं पाछे संकेतवट पधारे हैं ताको नाम गोपीवट है तहां अक्षय समय श्रीठाकुरजी स्नान करि व्रजभक्तन के संग विहार किये हैं तहां न्यारे न्यारे कुंज हैं तहां नाना प्रका-रके सुख व्रजभक्तन कों दिये हैं तहां अखिल लीला प्रगट दिखाई है ताके पास श्रीयमुनाजी के तीर तन-पावन है तहां श्रीठाकुरजी को विरह श्रीस्वामिनीजी को भयो है सो मानके समय श्रीस्वामिनी जी को नाम लेत हैं नेत्रन ते जलधारा वहत है तब यह समाचार

सखीनने श्रीस्वामिनीजू सों कहे तब श्रीस्वामिनी
जू तत्काल धायकें मिली बिरह सब दूर भयो तहां
नाना प्रकारकी विहार लीला करी है ताके पास गो-
पीनद है सो तहां गोपिका स्नान करे॰ तहां चार पीपर
के वृक्ष है सो श्रीठाकुरजी के सखा हैं॰ ताके आगे
चीरघाट है तहां कात्यायनी देवीके व्रत करिवेको गोपी
जन आवती तहां घाट ऊपर सब वस्त्र धरि स्नान
करि कात्यायनी देवी की पूजन करतीं धूपदीप नैवेद्य
करि चंदन समर्पिकें विनती करती जो हमारे पति श्री
ठाकुरजी होंय या प्रकार हेमंत ऋतु में नित्य नेम सों का-
त्यायनी देवी की अर्चना करती तब श्रीठाकुरजी गो-
पीनको बहुत आरत देखिकें चीर हरन एक दिन
करे सो चीर लेके कदंब के ऊपर पधारे पाछे गोपी
जनने बिनती कीनी पाछे श्रीठाकुरजी ने आज्ञा
दीनी ताही भांति सों कियो तब श्रीठाकुरजी ने गोपी
जनके चीर दिये और हृदय को ताप मिटायो स्व-
रूपानंद को रस अधरामृत दूपान करायो तहां
पीपर के नीचे श्रीआचार्यजी महाप्रभुन की बैठ-

कहै. तहां चीर विहारी श्रीठाकुरजी को मंदिर है. तहां कात्यायनी देवी को मंदिर है यह चीरघाट की लीला है सो कहत हैं.

चीरघाट

ताके आगे नंदघाट है.

तहां शुध्द द्वादशी थोरी. हती सो पिछली रात्रि कूं

श्रीनंदरायजी स्नान करिवेकों पधारे सो वरुणके दूत
हते सो श्रीनंदरायजी को वरुण लोक में लेगये सो
सखा पुकार करे नंदरायजी के हे श्रीकृष्णजी हे श्री
बलदेवजी नंदरायजी को कोई लेगयो तब
श्रीकृष्ण बलदेवजी आये सो बलदेवजी तो श्रीय
मुनाजी के तीर पर ठाडे रहे और श्रीकृष्णजी जलधा
रा होयके वरुणके लोक में पधारे तब वरुणने श्री ठाकु
रजी को सिंहासन के ऊपर पधराय नानाप्रकार की
पूजा कीनी पाछें स्तुति कीनी सो श्रीठाकुरजी प्रसन्न
भये तब वरुण कों वरदान दियो जो तोकों जल को
राज्य कियो सो या प्रकार वरुण को वरदान देके श्री
नंदरायजी को नंदघाट ऊपर ले आये हैं तब श्री
नंदरायजी ने स्नान किये तब नंदरायजी ने जान्यो
जो ये कोई अवतारी पुरुष है तहां पीपर के वन है
सो श्रीनंदरायजी के सखा हैं ताके पास भयगाम
है सो तब श्रीनंदरायजी को वरुण लेगयो तब सब
नको भय भयो ताते गाम हू को नाम भयगाम
है. पाछें तब श्री नंदरायजी आये तब सब

व्रजवासीनको स्थानंदमयोहै.

नंदघाट

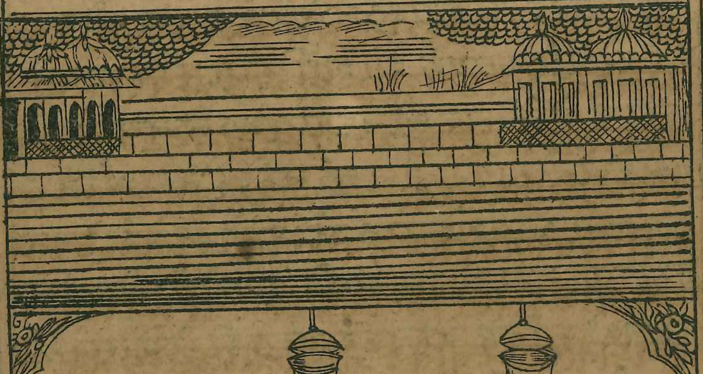

ताके पास उपवन है

तहां व्रजभक्तन के संग नानाप्रकारकी लीला कू

थीई है तहाँ नंदरायजी के बगीचा है तहां श्री नंदरा-
यजी स्नान करिकै शालिग्राम की पूजा करते सो
नैवेद्य धरिकै नंदरायजी ने नेत्र मूंदे तब श्रीकृष्ण
ने होले होले आयकै सो शालिग्राम को अपने
मुख में मेले तब श्री नंदरायजी ने नेत्र खोले
तब देखे तो शालिग्रामजी नहीं है तब श्रीनंद-
रायजी ने श्रीयशोदाजी सों कह्यो जो मेरो देवता
कहां गयो तब श्रीठाकुरजी के मुख में ते श्रीशालि-
ग्राम को काढि के श्री नंदरायजी को दीये तब श्री
नंद श्रीयशोदा मिलिकै केशर को स्नान कराय कें
बहुत भांति सों विनती कीनी जो या बालक को
दोष देखो मति या बालक पर कृपा करो और
मेरो अपराध क्षमा करो तब श्री शालिग्रामजी
ने प्रसन्न होयकै कहे जो पुत्र तुम्हारो श्री कृष्ण को
सदा कल्याण होय आज मो अपराधत को सं-
बंध भयो है ताते में अब पूर्ण हो· यह नंदघाट
की लीला है·

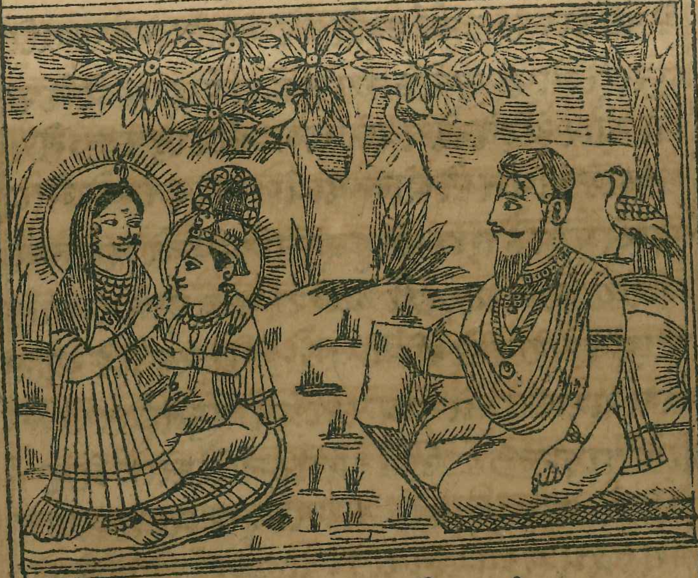

ताके पास वसई गांव है
तहां ब्रह्मभक्त श्रीठाकुरजी के वस भये हैं -
ताके आगे वच्छवन है तहां वच्छबिहारी श्री
ठाकुरजी को मंदिर है तहां ग्वालमंडली की ठौर है
तहां ग्वाल चौंतरा है तहां ग्वालकुंड है तहां हरिबो
लतीर्थ है तहां श्रीयमुनाजी की झील है तहां ते
ब्रह्माने बछरा हरे हैं तब श्रीदामा सखाने आय

के श्रीठाकुरजी सों कह्यो जो महाराज बछरादि-
कनाहीं सो यह सुनीके ग्वाल हाथ को हाथ ही में र-
ह्यो और ढूंढिवेको पधारे तब श्रीठाकुरजी ने
ब्रम्हाके पांयन को खोज पायो तब जान्यो जो ब्र-
म्हा लेगयो है तब श्रीकृष्णने अपनो महात्म्य
जनायो ताते आपही बछरा गाय होय रहे ताते
आपु वछरानको श्रीगोवर्धन की तरहटी के आस
पास चरावते सो गायन को प्रेम बहुतहीभयो जै-
से श्रीठाकुरजी को ऊपर प्रेम हूतो तैसोई प्रेम
अपने बछके ऊपर भयो ताके दूध बहुत भयो त
ब यह प्रेम सबन को और ग्वालन को देखिके श्री
बलदेवजी चकित होय रहे तब मनमें कहे जो
ये हमारे पहिले को तो वच्छा और सब तो यह
नहीं यहां तो सब भगवतस्वरूप दीषत हैं सो यह
कृष्ण कारण है ये जानके श्रीबलदेवजीने श्रीकृ-
ष्ण सों पूछी श्रीकृष्णने तब ब्रम्हाकी कृत्य सब
कही यह वच्छ गाम की लीला है॰

ताके पास रासौली गाम है

तहां रास मंडल को चौंतरा है· तहां पीपर के वृक्ष हैं तहां श्रीठाकुरजी ने व्रजभक्तन सहित रास लीला करी है तहां कात्यायनी देवी है·

वसई गाम

ताके पास खेई गाम है

तहां रेमरीघर श्रीआचार्यजी महाप्रभुन की श्री-
श्रीठाकुरजी की बैठक है तहां ग्वालीयां गोरखा
महाप्रभुन को नंदगाम है पधराय लायो है सो घा-
छें ग्वालीयां दूध पूरो लायो है सो श्री आचार्यजी
महाप्रभु खीर करिके आरोगे है पाछें नंदगाम
में पधारे हैं तहां करील के छोटे वृक्ष हैं ताके पा-
स आरस गाम है तहां व्रजभक्तन ने श्रीठाकुर
जी की कीर्ती गाई है तहां श्रीयमुनाजी की पु-
लिन है तहां उपवन है तहां नाना प्रकार की मेवा
होत है तहां अनेक प्रकार के फूल फूलि रहे हैं ताके पा-
स रामतलाव है तहां रामचंद्रजी को स्वरूप है-
तहां श्रीठाकुरजी ने रामचंद्रजी को स्वरूप धरिके
गरुड को संदेह दूर कियो है ताके परे नरी से-
मरी गाम है तहां श्री बलदेवजी को मंदिर है
तहां सखीन के दो स्वरूप हैं सो दो सखी मान
छुडायवे में बडी चतुर हीं ताते श्री ठाकुरजी
और श्रीस्वामिनीजी को परमप्रिय हैं · तहां

किशोरीकुंड है तहां सब ब्रजभक्त मिलिके स्ना
न करत्ते पाछे नानाप्रकार के शृंगार करिके श्री
ठाकुरजू सहित विहार किये हैं

श्रीगरुड गोविंद

ताके पास गरुड़ गोविंद गाम है
तहां सखान ने श्रीठाकुरजू को नाम गोविंद ध-

र्यो है तहां श्रीठाकुरजी ने इंद्र को मानभंग कि-
यो है तब ते व्रज के इंद्र श्री ठाकुरजी कहाये हैं ताके
पास छटीकरा गाम है तहां सखीन के छः कुंजभवन
हैं तहां वर्षाऋतु में रात को व्रजभक्तन सहित श्री
ठाकुरजी ने विहार कियो है ताके पास अक्रूरजी
को गाम है ताके पास भतरोंड है तहां ऋषिपत्नीन
सो अन्न मंगायके भोजन कियो है॰

ताके पास वृंदावन धाम है॰

तहां काली मर्दन की ठौर है तहां कालीमर्दन श्रीठा-
कुरजी को स्वरूप है तहां कदंब को वृक्ष है तहां ते श्री
यमुनाजी में कूदे हैं नागनाथ्यो है तहां श्रीआदिवारा-
हजी को मंदिर है सो स्वरूप पुरानन में प्रसिद्ध है ता-
के पास कालीमर्दन घाट है· तहां स्नान करिके श्रम
दूरि कियो है ताको पसीना भयो है सो कालीके मर्द-
न में सो श्रम निवर्त कियो है ताके पास जुगल घाट
है तहां जुगलकिशोर को मंदिर है ताके पास बांकेवि-
हारीजी को मंदिर है· तहां श्रीठाकुरजी को मंदिर है
तहां विहारीपुरा है· तहां श्रीराधावल्लभजी को मं-
दिर है ताके पास सेवाकुंज है तहां सेवाकुंज में रंगमह-
ल है तहां श्रीठाकुरजी श्रीस्वामिनीजी नित्यविहार
करत हैं तहां नाना प्रकार की कुमवेली छाय रही है
तहां नाना प्रकार के फूलन की सुगंध आवे है· ताके
आगे शृंगारवट है तहां सामवेद मुरली में गायो है
तहां बांस के वृक्ष हैं सो वेद की ऋचा है तहां श्रीस्वा-
मिनीजी की बैठक है तहां श्रीस्वामिनीजी के चर-
णचिन्ह हैं तहां जुगल स्वरूप नित्य विहार करत हैं

ताके पास श्रीयमुनाजी के तीर हिंडोरा झूलवे को व-
ट है ताके आगे वेनघाट है तहां कदंब के नीचे केशी
घनको मारिके यहां वेन बजायो है तहां कदंब के नी-
चे श्रीठाकुरजी की बैठक है तहां सब अन्नकूट आये
है सो नाना प्रकार की सामिग्री आरोगाई है पाछें
नीराजन उतारे हैं तहां रात्रिके समय विहार किये
हैं तहां केशीघाट है तहां श्रीआचार्यजी महाप्रभु
भागवत श्रीसुबोधिनीजी की कथा कहिकें तत्व सं-
ख्या कहिके तीर्थ निर्मल होयवे के लिये केशीको दोष दूर
कियो है ताते केशीघाट मुख्य है काहेते जो सकल ली-
लाको ठिकानो है ताके पास धीरसमीर को घाट
है तहां श्रीयमुनाजी ने ब्रजभक्तन को पेंडा दियो
है॰ तहां दुर्वासा ऋषिको महाप्रसाद ख्वायो है॰
तहां पै दुर्वासा ऋषिको स्थल है तहां धीरसमीर
में नाना प्रकार की फुलवारी फूल रही है तहां विहार
किये हैं तहां पुलिन में रासादिक लीला किये हैं
तहां ब्रजभक्तन के संग जलविहार कियो है ताके
पास वंसीवट है तहां प्रथम बांसुरी बजाई है तहां

श्रीठाकुरजी और श्री स्वामिनीजी के चरणार-
विन्द हैं तहां होरी की रासलीला करी है तहां श्री आचा-
र्यजी महाप्रभुन की बैठक है तहां श्रीगुसांईजी
की बैठक है तहां नित्यविहार की ठौर है· ताके पास
गोपेश्वर महादेवजी को मंदिर है तहां वृंदा देवी की
ठौर है तहां पूर्वी ब्रजभक्त वसे हैं ताके पास परली
ओर चाणुर मुष्टिक की ठौर है· ताके पास ब्रम्हकुं-
ड है तहां ग्वालमंडली की ठौर है तहां छाक आरो-
गे हैं तहां सब ब्रजभक्तन को अपने हस्तकमल
सों महाप्रसाद दीयो है तहां अपने हाथ कामरी
सों पोंछे हैं तहां कुंडते ब्रम्हा प्रगट होयके बछरा
हरन को अपराध क्षमा करायो है तहां केदान
कोर ब्रम्हा अनेक मुखके श्रीकृष्ण को दिखायो
है तब ब्रम्हा यह माहात्म्य देखिके ब्रजरज में लो-
लोट गये बहुत स्तुति करि और कह्यो जो महाप्र-
भु यहां ब्रजभूमि में गुल्मलता औषधी है मन
आवे सो करो जो तुम्हारे भक्तन की चरणरेणु
मेरे मस्तक पर परे तामें कृतकृत्य होउं-

सो या प्रकार विनती करिके ब्रह्मा अपने लोककूं
गयो ताके पास गोविंददेवजू को मंदिर है ताके पास
श्रीगोपीनाथजू को मंदिर है ताके पास श्रीराधारमण
को मंदिर है ताके पास निधिवन है तहां नित्यविहार
की ठौर है तहां नाना प्रकार की द्रुमवेली अनेक प्रका
र की फूल फूल रहे हैं तहां श्रीविहारीजू श्रीठाकुरजू
प्रगटभये है तहां रासमंडल की ठौर है तहां शृंगार
मंदिर है ताते परे राधाबाग है तहां श्रीस्वामिनीजू
को निकुंज मंदिर है तहां श्री ठाकुरजू नित्य विहा
र करते है ताके पास गोविंदकुंड है तहां अनेक प्रकारके
वृक्ष है ताके पास वेणुकुंड है तहां वेणुनाद करिके जल
प्रगट कियो है तहां सब गाय सखान जलपान करा
ये हैं ताके पास वत्स गोप की ठौर है तहां ज्ञानगुदड़ी
है तहां श्रीयमुनाजू की पुलीन है तहां भगवत यर्थावा
त होत है तहां श्रीयमुनाजू और श्रीस्वामिनीजू
ने मिलके गान कियो है तब सब सखी उनको स्वरूप
देखके और गान सुनिकें चित्रकीसी नाईं ठाड़ी रह
गई हैं पाछें रासलीला करी है तहां नाना प्रकारकी न्यारी

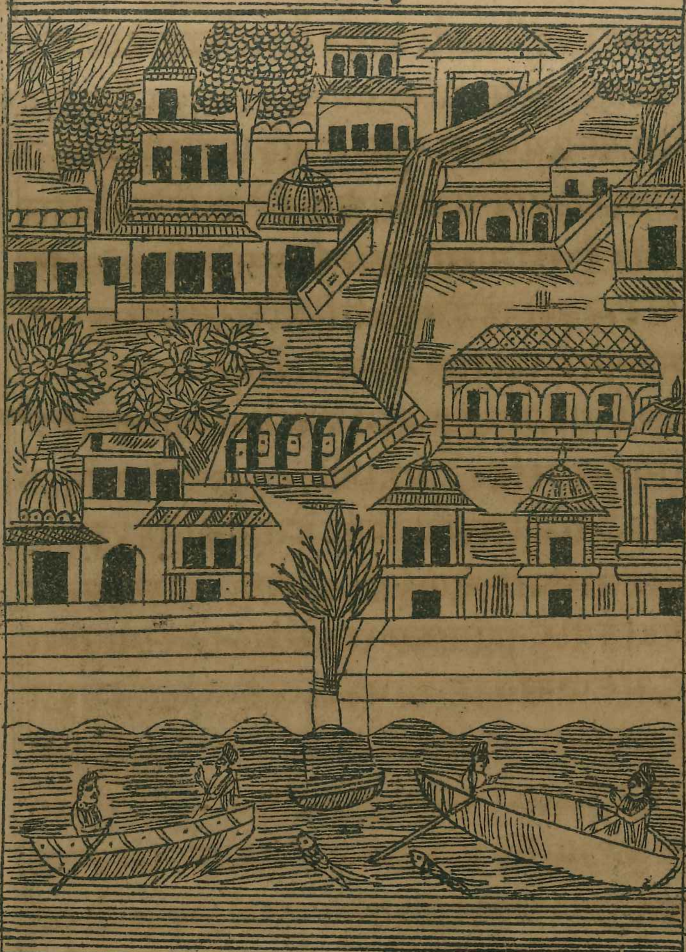

न्यारीकुंजहैं.सोतहांनित्यविहारलीलाकरतहैंतहां
जुगलस्वरूपनित्यरासविलासकरतहैंतहांतेआगे
चीरघाटहैतहांश्रीठाकुरजीनेचीरहरनकियेहैंता
केपासकदंबकोवृक्षहैताकेऊपरश्रीठाकुरजीचीर
हरकेपधारेहैंयहश्रीवृंदावनकीपरिक्रमामेंधामहैं
अबपारकेवनकहतहैं। (प्रथम बेलवन है)

तहां नाना प्रकारकी द्रुम वेली फूल रही हैं तहां ब्रजभक्त
नने श्रीठाकुरजी श्रीस्वामिनीजी को शृंगार फूलन को
कियो है तापाछें नाना प्रकारकी सामिग्री आरोगाई
है तहां उष्णकालमें श्रीयमुनाजी के तीरमें निकुंज मं-
दिरमें विराजे हैं तहां शीतल मंद सुगंध वायु चलत
है तहां श्रीस्वामिनीजी की बैठक है

ताके परे मांट गाम है

तहां दधिके मांट श्रीठाकुरजीने ढोलडे हैं तहांते आ

जके उपवन में छिपेहैं तबश्रीयशोदाजने उपव-
नमेंढूंढिके बाहिरआदेहैं तबदेषेतो देह में दधिलिप-
टिरह्योहै सोश्रीयशोदाजने श्रीठाकुरजकों स्नान
करायेहैं पाछें नानाप्रकारके शृंगारधरायेहैं तहांनाना-
नाप्रकारके आभूषणपहिरायेहैं पाछे नानाप्रकारकी
सामग्री आरोगाईहै तहां यमुनाजकीझीलहै तहां
गायनकोजलपान करायेहैं यहमांटगांवकीलीलाहै

तांकेपास भांडीरवनहै

तहांनानाप्रकारकीलीलाश्रीबलदेवजने सषान
सहितकरी है तहांश्रीबलदेवजनेप्रलंब दैत्यको मा-
र्योहै तहांभांडीरवट है तहां षेलमें श्रीठाकुरज श्री-
दामासषासोहारेहैं तब श्रीठाकुरज श्रीदामासषा
को आपनेकांधेपरचढायके वटकेपास लायेहैं तबश्री
स्वामिनीजके यहसुनके मन में बहुत षेदभयोहै पा-
छें श्रीस्वामिनीजने श्रीठाकुरज सोपूछो जोयह
कहालीलाहै तब श्रीठाकुरजने आपने हारवे को
कारण कहिके श्रीस्वामिनीजको समाधानकियो
है तहां भांडीर कूपहै तहां को जल तीनप्रकार की

तापको दूर करे है सो कूपको जल श्रीबलदेवजू श्रीठाकुरजू पान करते तहां कुंड है तहां नाना प्रकारकी द्रुमवेली छाय रही है· तहां नाना प्रकारके कमल कमोदनीके फूल फूल रहे हैं यह भांडीरवनकी लीला है

भांडीरवन

ताके पास खिन्नेली गाम है

तहां श्रीबलदेवजू श्रीठाकुरजू को बगीचा है· तहां नाना प्रकार के फूल फूलत हैं तहां नाना प्रकार की सामग्री सिद्ध करके श्रीठाकुरजू व्रजभक्तन को बांटे तहां श्रीललिताजू कों पधराय लाये हैं· तहां नाना प्रकार के सुख व्रजभक्तन को दिये हैं·

ताके पास सघवन है

तहां गऊघाट है तहां मध्यान्ह के समय सब गायनकों जलपान कराये हैं तहां श्रीबलदेवजू सहित

श्रीठाकुरजी ने जलपान किये हैं तहां बड़े बड़े वृक्ष हैं
ताके नीचे श्रीठाकुरजी मध्यान्ह समय ग्वालमंडली
करके छाक आरोगे हैं तहां नानाप्रकार के हास्यविनोद
लीला सखान के संग करत हैं तहां सब गोप श्रीयमुना
जी के तीर गधेला घास चरत हैं तहां मधुसूदनकुंड है
तहां व्रजभक्तन के मनको सुद्ध किये हैं सो तहां एक
समय श्रीठाकुरजी ने मान कियो है तब व्रजभक्तन
ने मान मनायो है पाछें व्रजभक्तन ने बिनती कीनी
है जो आजते अब आप मान कबहू मति करो तहां
सब व्रजभक्तन के मनोरथ सिद्ध किये हैं तहां मूंज
कौ वन है तहां गाय गोप सब डगर भूल गये हैं ता-
पाछें आप श्रीठाकुरजी बलदेवजी ढूंढिवे पधारे हैं
सो गाय गोप सब वन में मिले हैं तहां दावानल अ-
ग्नि उठी है सो अग्नि देखके सखा डरपन लगे तब
श्रीकृष्णजी ने सखान सों कही तुम नेत्र मूंदो तब सखा
नने नेत्र मूंदे श्रीठाकुरजी सब अग्निपान कर गये
हैं तब सखानने नेत्र खोले सो देखें तो अग्नि कहूं नाहीं
तब सब सखान ने श्रीठाकुरजी के चरणारविंद स्पर्शे हैं

ताके पास डांगोली गाम है

तहां सख्यानकी बैठक है· तहां श्री ठाकुरजी लाठी सूले हैं तहां नाना प्रकारकी द्रुमवेली हैं ताके पास मान सरोवर है तहां श्री स्वामिनीजीने मान कियो है तब श्री ठाकुरजीने मान मनायो है तहां श्री ठाकुरजी श्री स्वामिनीजी की बैठक है तहां श्री आचार्यजी महाप्रभुनकी बैठक है· तहां नाना प्रकार की द्रुमवेली है तहां नाना प्रकारकी लीला श्री ठाकुरजीने श्री स्वामिनीजी सहित कीनी है तहां जलसिज्या विहार करिके व्रज भक्तन को परम सुख दिये हैं तहां श्री आचार्यजी महाप्रभुनकी बैठक है तहां नाना प्रकारके कमल कमोदनी के फूल फूल रहे हैं तहां गहरोवन है तहां यमुनाजी की झील है

ताके किनारे पिपरोली गाम है

तहां मानिक शिला है तहां श्री गुसांईजी को रास लीला को दर्शन भयो है· तहां श्री गुसांईजीने नाना प्रकार की सामग्री सिद्ध करिके श्री ठाकुरजी को भक्तन सहित आरोगाई है ताके पास और वन है तहां श्री ठाकुरजीने बछरा चराये हैं तहां वछवनको घाट

है· तहां मध्यान्ह समय वछरान को अन्नपान करा
ये हैं तहां हीं सिनकी लत्ता है तहां छोंकर के वृक्ष हैं:
तहां श्रीबलदेवजी की श्रीदामा सखा की बैठक है
तहां श्रीठाकुरजी बैठते तहां सखान सों अनेक
प्रकार के हास्य विनोद करत हैं·

ताके पास लोहवन है

तहां कृष्णकुंड ग्राम है तहां श्रीठाकुरजी ने लोहासु
र दैत्य कों मार्यो है तहां श्रीठाकुरजी ने लोहे को
दान कियो है तहां ब्रह्मा के पुत्र सनकादिक की तप-
स्या की ठोर है तहां कृष्णकूप है तहां श्रीयशोदाजी ने

श्रीठाकुरजी कों स्नान करावे हैं तहां लोहातथानी-
लमणितथाश्यामवस्त्र को दान करावे हैं यहलोह-
वनकी लीलाहै लोहवन

ताके पास गोपालपुर गाम है
तहां श्रीठाकुरजी ने गोचारन लीला करी है तहां व्र-
जभक्तन ने श्रीठाकुरजी को नाम गोपाल धरयो है

गोपालपुर

ताके पास रावली उपवन है
तहां श्रीराधाजी को प्रागट्य भयो है तहां ननसार
में कीरतीजी रही हैं- तहां जन्म भयो है पाछे श्री-

रतीजू वेटीको लेकें वर्षाने में पधारी हैं तब श्री
नंदरायजू श्री ठाकुरजू को लेकें नंदग्राम पधारे हैं
यह रावलकी लीला है

ताके पास बुढ़ियाको घेरो है
ताके बेटाकी बहू मानवती हुती ताके पास श्रीकृ-
ष्ण वा डोकरी के बेटाको स्वरूप धरिकें पधारे सो वा
डोकरी सों कह्यो जो मैया में ऊपर जायकें सैन करत

होंतोकों कोई तेरो बेटा को स्वरूप धरिके नाम लेके
र पुकारे ताकों तू ईटन सों मारियो किवार मति
खोलियो यह कहिकें श्रीठाकुरजी वाकी बहू के पास
पधारे जब डोकरी ने गाढ़े किवाड़ लगायके बैठी
पाछे वाको बेटा आयो सो बहुत पुकार्यो परंतु
वा डोकरी ने ईटन सों मार्यो किवार नहीं खोले यह
बुढिया के बेर की लीला है॰

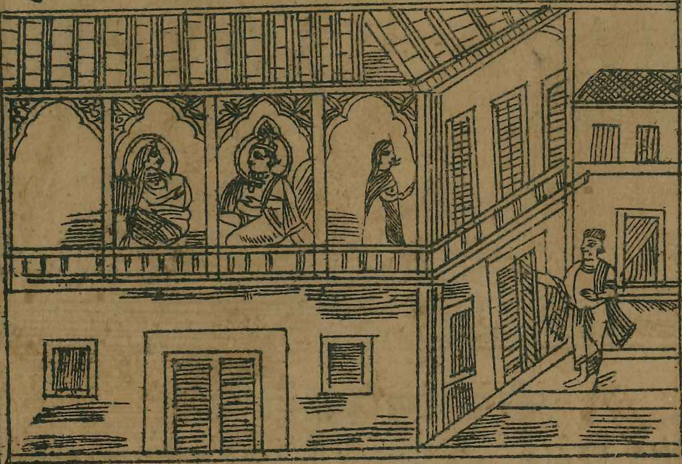

ताके पास बंदी वनं है गाम है
तहां बंदी वनं दी होई देवीन के स्वरूप हैं सो श्रीनंद

रायन्के घरकी गोबरहारी हैं सो सब गायनके
गोबरके उपरा थापती और श्रीठाकुरजी श्रीबल-
देवजीके देखे बिना एक छिन नहीं रहती नित्य नियम
सों दर्शन करतीं ताके पीछे जलपीती तहां अंदी अन-
नंदीकुंड है तहां श्रीठाकुरजी ने गायबछरान को जल
पान करायो है॰ यह अंदी अनंदी की लीला है॰

ताके परे श्रीबलदेवजी को (रीढ़ा) गाम है
तहां श्रीबलदेवजी विराजे हैं सो श्रीगोकुलतें चार
कोस है जे मन शुद्ध राखिकें मांगत हैं तिनको मनवां
छित फल देत हैं तहां श्री गोकुलनाथजी स्वरूप
को वहीते आकर पधरायके माखन मिश्री दूधपाक
को हंडा करिकें आरोगाये हैं पाछें और हूं नाना प्रकार
की सामग्री सखड़ी अनसखड़ी सब सिद्ध करिके आ-
रोगाये हैं तहां श्रीबलदेवजी को बगीचा है तहां
श्रीरेवतीजी सहित नाना प्रकार की बगीचा में विहा-
र लीला करी है तहां बलभद्र कुंड है तहां जलविहा-
र करत हैं· तहां कुंड में तें श्रीबलदेवजी और श्रीरे-
वतीजी प्रगट भये हैं तहां जलविहार करत हैं तहां
रेणकुंड है· यह श्री बलदेवजी की लीला है·

ताके पास हथोरा गाम है

तहां श्रीनंदरायजू की थपाई है॰ तहां सगरे षडे ष-
डे गोपजी पनंद नंदरायजू सहित बैठते तहां व्रजकी
चर्चा करते तहां श्रीठाकुरजू श्रीबलदेवजू षेलत
षेलत आय श्रीनंदरायजू की गोदमें बैठते तब
श्रीनंदरायजू परमप्रीतिसों मुष चुंबन करते मेवा
भोग आरोगावते सो श्रीठाकुरजू मांगते सोई
देते यह हथोरा की लीला देषिके गोप कहे
हेंन्ने धन्य श्रीनंदराय धन्य श्री यशोदाजू हैं

जिनके घर ऐसे पुत्रको प्रागट्य भयोहै
यह हवेली की लीलाहै

ताके परे चिंताहरन ब्रह्मांड घाटहै
तहां श्रीठाकुरजीने संपूर्ण ब्रजभक्तनकी चिंताहरी
ताके पास ब्रह्मांड घाटहै तहां श्रीठाकुरजीने म-
त्तिका खाईहै तब सब सखानने श्रीबलदेवजी
नेजायके श्रीयशोदाजीसों कही जो भैयाजी श्री

कृष्णने माटी खाई है तब श्रीयशोदाजी लकुटी
लेके श्रीठाकुरजी के पास दौरी आई और श्री
यशोदाजीने कही जो तेने माटी खाई है क्यों खाई है
तब श्रीठाकुरजी कहे जो मैयाजी मैंतो माटी नहीं
खाई है मेरो मुख देखले तब श्रीठाकुरजीने मुख दि-
खायो सो श्रीयशोदाजी देखिकें चकित होय रही सो
देखे तो मुखमें तीनलोक सप्तद्वीप नवखंड सब मु-
खारविंद के भीतर हैं तब श्री यशोदाजीने विचार्यो
जो मोकों कछुई भ्रम भयो होयगो· यह ब्रह्मांड घाट
की लीला है· ताके पास श्रीनंदरायजी को महावन है

ताके पास महावन है

सो श्रीनंदरायजू को गाम है तहां बच्छ गोपकी ठौर है
तहां श्रीठाकुरजी गाय चरायवे कों पधारते तहां श्रीयशु-
दाजी सखान को सच्चामन देती जो तुम मेरे लाला कों
नीके ले जईयो और नीके ले आईयो और भूखे हो-
यतो सामिग्री आरोगाईयो में तुमकूं सांझकूं इच्छा
भोजन कराउंगी और वनके लिये सामिग्री प्रिय स-
खान के साथ बंधाय देती तहां श्रीनंदरायजू के दातन
करिवे को टीलो है तहां सवारे बैठके दंतधावन करते तहां
श्रीठाकुरजी के आयवे को पैंडो देखते ताके नीचे गोपन
की हवेली है ताके पास शकटासुर तृणावर्त को मार है॰

ताके पास श्रीनंदरायजू की सिंहपोर है ताके भीतर

नंदसवन है तहां दधिमथन की ठौर है तहां श्रीठाकुरजी
की छठी पूजी है तहां दधिमथन करिकै श्रीयशोदाजी
ने मांखन श्रीठाकुरजी को दियो है ताके पास श्रीठाकु
रजी के पलना की ठौर है तहां खस्सी खम्सा है ताके
पास श्याम मंदिर है तहां श्रीठाकुरजी की नाल छेदी
है ताके पास नंदकूप है तहां श्रीयशोदाजी ने युवतिन
सहित पुत्र को गोदी में लेकें कूप को पूजन कियो है
ताके पास यमलार्जुन की ठौर है तहां श्रीठाकुरजी
दामोदर लीला करिकै ऊखल कों वृक्षमें जरकाय नल
कूवर को उद्धार कियो है ताके पास श्री मथुरानाथजी
श्री द्वारकानाथजी को मंदिर है सो श्रीनंदरायजी के
सेव्य ठाकुरजी हैं तिनके पास महामल्लरायजी श्रीठा-
कुरजी हैं ताके नीचे पूतनाखार है तहां श्रीठाकुरजी ने
पूतना को मारी है ताके पास नंदरायजी की गायन
[illegible]खिड़क है तहां गोचर के टीले हैं ताके पास रमणस्थल
[illegible]हां श्रीबलदेवजी श्रीठाकुरजी सहित घुटुवन
[illegible]ला करी है तहां व्रजभक्तन के संग रमण किये हैं
[illegible] गोपीजनन के न्यारे न्यारे रमण के मंडल हैं तहां श्री

ठाकुरजी ने सकलन कों नानाप्रकार के सुख दिये हैं ताके पास रमणघाट है तहां श्रीयमुनाजी में जल विहार करत हैं ताके पास गोपकूप है तहां सो भवती अमावास्या को महात्म्य है तहां जो स्नान करे ताकें अलौकिक देही की सिद्धि होय ताके पास नारद कोटी- लो है तहां नारदजी ने छै महिना लों तपस्या कीनी है तहां नारदजी ने गान कियो है ताके पास गोविंदस्वा- मिके गान करिवे की टीलो है ताके पास कोपलाघाट है सो तहां पूतना कूं दाह कियो है सो ताकी देह में चंदन की सुगंध उठी है सो गोपन को देखके बड़ो आश्चर्य भयो है तब कोई ने कह्यो श्री ठाकुरजी को मुखारविंद याकी छाती सों लग्यो ताते याके सकल दोष दूरि भये सो कोई यावत के किनारे लगे ताते कोईला गाम भयो है, और दूसरो अभिप्राय यह है जो श्रीवसुदेवजी श्रीठाकुरजी को लेके अर्धरात्रि के समय जब आये तब वसुदेवजी यमुनाजी में पैठे तब जल नाक लं- ई आयो तासमय वसुदेवजी पुकारे अब में डूब हों तासें या बालक कों कोई लेओ क्योंकि में जो

डूबत हों ताकी कोई चिंता नहीं परंतु या बालक की
कोई रक्षा करो तब श्री ठाकुरजी के चरण परसिकें
श्रीयमुनाजी ने मार्ग दियो ताते कोईला गाम भ-
यो ताके पास वल्लभ घाट है तहां श्री गोकुलनाथ
जी नित्य संध्यावंदन करते ताके पास गांधीपुरा गां
व है· तहां श्रीगोकुलनाथजी च्यारवेर तथा पांचवेर ग्वा-
लमंडली करते ताके पास उत्तलेश्वर घाट है· तहां देव
कें श्रीवसुदेवजी श्रीठाकुरजी कों श्री यशोदाजी की
गोदमें पधरायकें कंन्याकूं मथुरा लेगये हैं ताके पास
उत्तलेश्वर महादेवजी की चोकी है· तहां श्रीविठ्ठलना-
थजी को बाग है ताके पास गोपालघाट है तहां श्री ठा-
कुरजी ने गोचारन लीला करी है तहां ब्रजभक्तन ने
श्रीठाकुरजी को नाम गोपाल धर्यो है ताते घाट को
नाम गोपालघाट है ताके पास श्रीगोकुलनाथजी को
बाग है तहां बाजनो टीलो है तहां देवतान ने नगा-
रेके दुंदुभी बाजे बजाये हैं फूलन की वर्षा करी
ताके पास श्री मदनमोहनजी को बाग है तहां श्री
लेश्वर महादेवजी को स्वरूप है· ताके पास

वंशपौर है तहां श्री ठाकुरजी ने प्रथम दिन वांसुरी
को शब्द कर्‍यो है॰

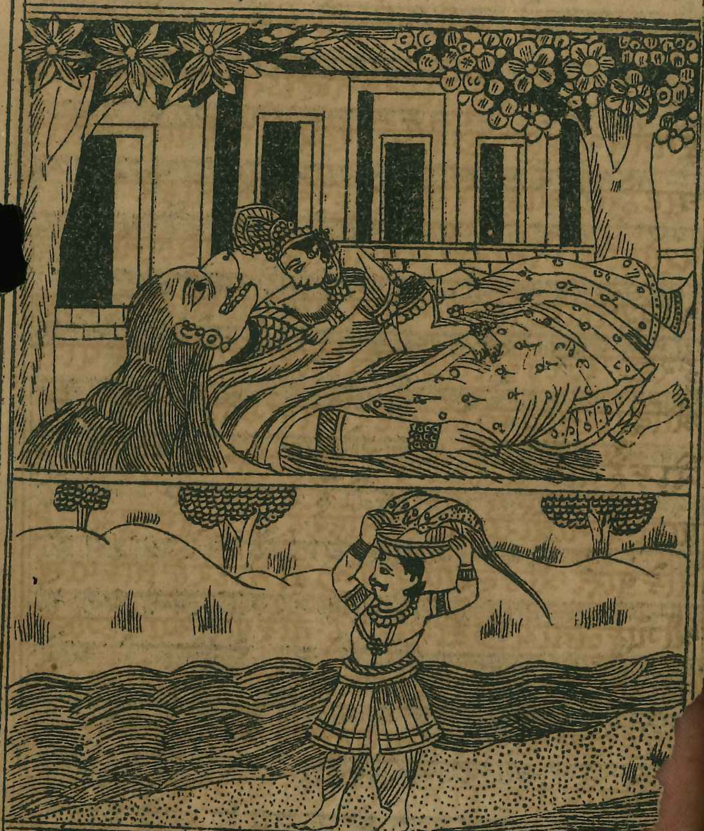

ताके पास कर्णवेद कूप है· तहां श्रीठाकुरजी के तथा श्री
बलदेवजी के कान छेदे हैं तहां श्रीठाकुरजी की तथा श्री
बलदेवजी को गर्गाचार्यजी ने नाम करण कियो है ताके
पास रत्न चौक है तहां रत्नजड़ित आभूषण वल्लभ-
कुलनने श्रीठाकुरजी कों पहिराये हैं· ताके पास यशोदा
घाट है तहां श्रीठाकुरजी ने घुटुरवन लीला करी है तहां श्री
यशोदाजी नित्य रई मथनी धोयवे कों पधारती तटासें
श्रीयशोदाजी नित्य जल ले पधारतीं सो जल श्रीठा-
कुरजी पान करते ताके पास सिंघ पौरि है ताके पास
श्रीविठ्ठलनाथजी को मंदिर है तहां श्रीहरिरायजी की
बैठक है ताके पास श्रीमदनमोहनजी को मंदिर है ताके
पास श्रीमाधौरायजी को मंदिर है सो स्वरूप प्राचीन है
ताके पास श्रीकल्याणरायजी को मंदिर है· ताके पास
श्रीगोकुलनाथजी को मंदिर है· ताके पास आनंदग[illegible]
तहां श्रीठाकुरजी ने सखान सहित घुटुरुवन लीला करी
ताके पास श्रीगोकुलनाथजी की बैठक है ताके पास श्री
नवनीतप्रियाजी को मंदिर है तहां श्रीगुस[illegible] जंपे
है ताके पास श्रीरघुनाथजी की बैठक [illegible]

द्वारिकानाथजी को मंदिर है ताके पास श्री आचार्यजी
महाप्रभुन की बैठक है तहां श्री आचार्यजी महाप्रभुनने
श्री नवनीत[illegible]प्रियाजी कों पालने झुलाये हैं ताको दधिकां-
दा जन्माष्टमी को उत्सव प्रथम मान्यो है ताके पास श्री
आचार्यजी महाप्रभुन की दूसरी बैठक है तहां छप्पन
छोंकर है तहां श्री आचार्यजी महाप्रभुन की बैठक है
[illegible]ाके पास श्री महाप्रभुजी के पौढ़िवे को चौंतरा है तहां
[illegible]गोवर्धननाथजी पवित्रा एकादशी की अर्धरात्रि
कों प्रगट होयके पधारे हैं तहां ब्रह्मसंबंध की आज्ञा श्री
आचार्यजी महाप्रभुजी को दीनी है तहां पुष्टि दैवी जी-
वन को अंगीकार किये हैं तहां श्री आचार्यजी महाप्र-
भुनने मिश्री भोग धरिके श्रीजी को पवित्रा पहिराये हैं
[illegible]हांते पुष्टी मारग प्रगट भयो है तहां श्री गोविन्द घा-
[illegible] तहां श्री आचार्यजी नित्य संध्या वंदन करते हैं
[illegible]नित्य विहार की ठौर है तहां श्री यमुनाजी ब्रन्द भ-
[illegible]तन सहित बैठते ताके पास श्री ठकुरानी घाट है
[illegible]हां श्री गुसांईजी नित्य संध्या वंदन करते ताके पा-
[illegible]गोकु[illegible]नाजी को मंदिर है तहां श्री देवकीनं[illegible]